पूर्व-प्राथमिक कक्षा में भाषा -शिक्षण | पढ़ना और लिखना

रोशनी देवांगन

भाषा हमारे विचारों व भावनाओं को सम्प्रेषित करने, सामाजिक सम्पर्कों एवं सम्बन्धों को स्थापित करने, उन्हें बनाए रखने तथा समाज और संस्कृति को समझने में सहायक होती है। शुरू में बच्चे इन सभी के लिए भाषा का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं उनके भाषाई कौशलों में सुधार आता जाता है और फिर बच्चे उपर्युक्त कार्यों के लिए भाषा का प्रयोग करने लगते हैं।

शाला-पूर्व वर्षों की लगभग सभी क्रियाओं में बातचीत शामिल होती है। खेलते समय भी बच्चे अपने द्वारा की जाने वाली क्रियाओं के बारे में अपने आप बोलते हुए टिप्पणी करते रहते हैं। शाला-पूर्व बच्चे अपने दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं का ब्योरा देते हैं और अपने परिवार व खिलौनों के बारे में भी बातचीत करते हैं। इसी बातचीत के द्वारा नए लोगों के सम्पर्क में आते हैं, उनकी अन्य लोगों से जान-पहचान बढ़ती है। सक्रिय रूप से बोलने व सुनने के दौरान ही बच्चे भाषा का उपयोग करना सीखते हैं। जिन बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित किया जाता है, उनकी बातचीत को ध्यान से सुना जाता है वे बच्चे बेहतर भाषायी योग्यताएँ प्रदर्शित करते हैं। बच्चों के भाषाई विकास को प्रोत्साहित करने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी बातचीत बच्चों के अनुरूप हो। उन्हें हमारे साथ बोलने में मज़ा आए तभी वे भाषा सीखने में अभिरूचि दर्शाएँगे और उनका शब्द-भण्डार भी बढ़ेगा।

इन्हीं कुछ सैद्धान्तिक बातों को ध्यान में रखते हुए शाला-पूर्व की कक्षा में बच्चों के पढ़ने-लिखने के कौशल-विकास के लिए कार्य किया गया। भाषा सीखने के विभिन्न पहलुओं पर कक्षा में ध्यान दिया गया जिससे इस कक्षा-स्तर के बच्चों में रुचि, उत्साह, शब्द भण्डार-विकास तथा पढ़ने–लिखने के कौशलों में अप्रत्याशित सफलता देखने को मिली है। आइए जानते हैं कि भाषा-शिक्षण के अन्तर्गत कक्षा में किस प्रकार विभिन्न काम किए गए।

भाषा-शिक्षण

बच्चे जब सर्वप्रथम शाला में प्रवेश करते हैं तब उनके पास अपनी एक समृद्ध भाषा होती है। इस आयु वर्ग के बच्चे अपनी बातों को अपनी भाषा में बेहतर ढंग से व्यक्त कर लेते हैं। बच्चे अपनी मातृभाषा को बख़ूबी समझते हैं व अभिव्यक्त कर लेते हैं। कह सकते हैं कि वे अपने घर की भाषा पर पकड़ रखते हैं। अब बच्चों की भाषा को महत्त्व देते हुए, बच्चे को शाला की भाषा सीखने के लिए प्रेरित करना शिक्षक की ज़िम्मेदारी होती है।

कक्षा में इस पर बहुत महत्त्व दिया जाता है कि बच्चे अपनी बातों को अपनी भाषा में रखें। उनकी भाषा, उनके विचारों को बहुत ध्यान, सम्मानपूर्वक व धैर्य से सुना जाता है। इसी दौरान कोशिश होती है कि हम (शिक्षक) धीरे–धीरे उनकी भाषा, विचार को शाला की औपचारिक भाषा में बदलकर उनके सामने रखें। तब बच्चे धीरे–धीरे कक्षा व स्कूल से जुड़ने लगते हैं। विभिन्न कविता, कहानी सुनने–सुनाने के दौरान तथा अन्य गतिविधियों के दौरान भी बच्चों को बोलने–सुनने का मौका दिया जाता है।

पढ़ना सीखना

इस तरह सत्र-प्रारम्भ से लगभग 3 माह तक मौखिक बातचीत, कविता, कहानी पर ख़ूब अभ्यास किए गए। इसके बाद धीरे–धीरे पढ़ने–लिखने के कौशलों के विकास पर ध्यान दिया जाने लगा। इस प्रक्रिया की शुरुआत सबसे पहले एक कविता से हुई। बच्चे कविता से परिचित थे। कविता थी –

मछली जल की रानी है,
जीवन उसका पानी है।
हाथ लगाओ डर जाती है,
बाहर निकालो मर जाती है।

इस कविता को बच्चे, समुदाय में माता-पिता, मित्र आदि से, विद्यालय आने से पहले ही लगभग सीख चुके थे।

इस कविता को बच्चों के सामने हाव-भाव, लय व अभिनय के साथ सुनाया गया। साथ-ही-साथ बच्चे भी उत्साहपूर्वक दोहराते गए। इससे बच्चों को यह कविता अभिनय सहित याद हो गई। अब बच्चे स्वयं से ही कविता को हाव-भाव के साथ गा रहे थे। दो–तीन दिन बाद इस कविता को चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा में डिस्प्ले कर दिया गया जिससे बच्चे रोज़ ही उस कविता को देख सकें। कई दिनों तक शिक्षक द्वारा इस कविता के हर शब्द पर उँगली रखकर कविता को पढ़ाया गया। शब्दों पर उँगली रखकर बच्चों से बार-बार पूछा जाने लगा,

उन्हें शब्द पढ़ने को प्रेरित किया जाने लगा। जिससे बच्चे उन शब्दों को प्रिन्ट के रूप में पहचान सकें। पहले चित्रित किए जा सकने वाले शब्दों की पहचान की गई, जैसे– मछली, रानी, पानी, हाथ आदि। धीरे-धीरे बच्चों ने उन शब्दों को पहचानना शुरू किया। फिर उन शब्दों को भी पहचानने लगे जिनके चित्र नहीं बन सकते, जैसे- जाती है, उसका, बाहर आदि।

इसके पश्चात एक और कविता ली गई। इस कविता के लिए भी वही पद्धति अपनाई गई जो पहली कविता के लिए अपनाई थी। इसे भी डिस्प्ले किया गया ताकि बच्चे इसे पढ़कर इसके शब्दों को प्रिन्ट के रूप में पहचान सकें। धीरे-धीरे कुछ विशेष शब्दों को बच्चे पहचानने भी लगे। उसके पश्चात दोनों कविता के कुछ चुनिन्दा शब्दों को अलग से एक चार्ट पेपर पर लिखकर डिस्प्ले कर दिया, जिसे बच्चे पढ़ते रहते थे और शब्दों को पहचान भी गए थे।

आलू कचालू बेटा कहाँ गए थे,

सब्जी की टोकरी में सो रहे थे।

बैंगन ने लात मारी रो रहे थे,

मम्मी ने प्यार किया हँस रहे थे।

अब इन शब्दों में से ऐसे शब्द, जिनके चित्र बन सकते थे उनका फ्लैश-कार्ड बनाया गया। इन कार्डों को रोज़ एक बार पढ़ा जाता था। पढ़ने के लिए एक खेल तैयार किया गया था जिसमें सभी फ्लैश-कार्ड टीचर के हाथ में होते थे। टीचर फ्लैश-कार्ड के नाम वाले साइड को बच्चों के सामने रखती थी। उसे देखकर बच्चों को बताना होता था कि कार्ड में क्या लिखा है। जो भी बच्चा पहले बताता था, कुछ समय के लिए कार्ड उसका हो जाता था। ऐसा करते समय यह भी ध्यान रखा जाता था कि जो बच्चे कक्षा-स्तर से पीछे हैं उनके लिए सहजता से पहचाने जा सकने वाले कार्ड दिखाए जाएँ। और बाक़ी बच्चों से कहा जाता था कि इस कार्ड को सिर्फ़ वही बच्चे बताएँगे, ताकि उन बच्चों को भी कार्ड मिल सके।

कार्डों को पढ़ने की प्रक्रिया सतत चलती रही और बच्चे सभी कार्डों को पढ़ना भी सीख गए। कार्ड पढ़ने के बाद कार्ड के शब्दों को बच्चे बोर्ड पर लिखते थे। इसी प्रक्रिया से बच्चे लिखना भी सीखने लगे। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए छोटी–छोटी कविताओं व कहानियों के द्वारा चुनिन्दा शब्दों को अलग करते हुए शब्द-पहचान की प्रक्रिया चलती रही। अब हमारे पास ऐसे बहुत सारे शब्द हो गए थे जिन्हें बच्चे पहचान चुके थे।

वर्णमाला से परिचय कराना

अब एक नई चुनौती आ रही थी कि बच्चे केवल पहले पढ़े गए शब्दों को ही पढ़ पा रहे थे, अपरिचित शब्दों को पढ़ने में बच्चे सक्षम नहीं थे। इस चुनौती को दूर करने के लिए हमने समग्र भाषा-शिक्षण पद्धति के साथ–साथ वर्ण-पहचान पर भी काम शुरू किया। जो शब्द बच्चे सीख चुके थे उन्हीं शब्दों को तोड़कर जैसे – मछली से – म छ ली, गमला से – ग म ला, अनार से – अ ना र, घर से – घ र आदि वर्णों की पहचान कराने लगे। शब्दों से ही वर्णमाला पहचान की प्रक्रिया शुरू की गई। वर्णमाला पहचान की प्रक्रिया में बच्चे उत्साह से भाग लेने लगे व शीघ्रता से वर्णमाला की पहचान करने लगे। कुछ ही दिनों में बच्चे लगभग 30-35 वर्णों को पहचानने लगे व नए शब्दों को हिज्जे करके व अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास करने लगे।

मात्राओं से परिचय कराना

इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए एक चुनौती आई कि बच्चे वर्ण पहचान कर शब्द पढ़ पा रहे थे, परन्तु मात्रा वाले शब्दों को पढ़ने में परेशानी हो रही थी। कुछ शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़ पा रहे थे पर कुछ शब्दों को नहीं पढ़ पा रहे थे, क्योंकि मात्राओं की पहचान नहीं हो पाई थी।

मात्राओं की पहचान के लिए विभिन्न रोचक व मज़ेदार गतिविधियाँ करवाईं। जैसे शुरू में *आ* की मात्रा बताने के लिए फेस एक्स्प्रेशन बहुत कारगर साबित हुआ। कुछ शब्दों जैसे मन, माना, मना को बोर्ड में लिखकर उच्चारणों पर चेहरे-मुँह की बनने वाले आकृति को बच्चे ध्यान से देखने लगे व स्वयं के उच्चारण के दौरान वैसे ही भाव बनाने का अभ्यास करते थे। वे बहुत बारीकी से जान गए कि *आ* की मात्रा को बोलते व सुनते समय चेहरे का भाव कैसा बनता है। कुछ ऐसे छोटे-छोटे शब्द लिए गए जिससे बच्चे परिचित थे जैसे- गमल व गमला बोलने से मात्रा व बिना मात्रा वाले शब्दों को समझने लगे थे। इस प्रकार अभ्यास करते हुए बच्चे *आ* की मात्रा वाले शब्दों को पढ़ना सीख गए। इसके अलावा इ, ई, उ, ऊ, ए तथा ओ की मात्रा के लिए बच्चों के नाम, उनके पालकों तथा शिक्षकों के नामों का सहारा लिया गया। जैसे खिलेश्वरी, कविता, परिधि, चित्रांशी, अनिल, विवेक, हेतल, केमन, सोहेल, रोशनी आदि। प्रायः सभी मात्राओं के लिए इन नामों में वर्ण व मात्रा मिल गए। नामों के द्वारा बच्चे बहुत जल्दी उच्चारणों से सम्बन्ध बना लेते थे, उन उच्चारणों से सम्बन्धित अन्य शब्द भी वे सोचकर बता पाते थे। कुछ शब्दों जैसे दादा के बाद दादी, चाचा के बाद चाची लिखने पर बच्चे बनावट के आधार पर शब्दों के उच्चारण का अनुमान लगाकर स्वयं पढ़ लेते थे। मात्राओं की बारंबारता के आधार पर कुछ कहानी भी बनाई गईं, जिसमें उन मात्रा की पुनरावृत्ति होती थी।

जैसे– *मोना और रोमा दो बहनें थीं। एक दिन दोनों डोड़की बाज़ार गईं। बाज़ार में दोनों समोसा खरीदीं। समोसा को झोले में रखा।*

इसी प्रकार उ की मात्रा के लिए *लालू-पीलू* की कहानी को सुनाया गया। इन कहानियों को चार्ट में लिखकर कक्षा में लगा दिया गया। जिसे बच्चे दिन भर देखते-पढ़ते रहते।

इस प्रकार से पूर्व-प्राथमिक कक्षा-स्तर के बच्चों को खेल-खेल व गतिविधियों के माध्यम से बहुत ही मज़ेदार ढंग से हिन्दी भाषा पढ़ने व लिखने के कौशलों का विकास करने का प्रयास किया गया। उम्मीद है सत्र के अन्त तक 10 बच्चों में से लगभग 9 बच्चे हिन्दी भाषा के शब्दों/वाक्यों को पढ़ना व लिखना सीख जाएँगे। इस दौरान अनेक चुनौतियाँ भी आईं जिसे हमने शिक्षकों के साथ बातचीत करके व बच्चों से राय लेकर दूर भी किया। सीखने के प्रति बच्चों के उत्साह व रुचि के सामने हमें चुनौतियों का क़द काफ़ी बौना-सा लगा।

रोशनी देवांगन ने हिन्दी साहित्य से एमए तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई)में डिप्लोमा किया है। वे 2017 से अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़ में पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कर रही हैं। उन्हें छोटे बच्चों के साथ रहना, उनसे बातचीत करना एवं उनके साथ खेलना बेहद पसन्द है। अपने ख़ाली वक़्त में वे कहानियों की एवं शिक्षण सम्बन्धी क़िताबें पढ़ना और संगीत सुनना पसन्द करती हैं। उनसे Roshni.dewangan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अक्सर बच्चे ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो बड़ों को निरर्थक लगती हैं। आमतौर बड़े इस तरह की टिप्पणी करते हैं कि, 'ओह, वह तो ख़्याली पुलाव पका रहा है', 'खेल रहा है' या 'बस, समय बर्बाद कर रहा है।' हमें लग सकता है बच्चा उपर्युक्त स्थितियों में भला क्या सीख रहा होगा? जब हम सीखने के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में ख़ुद-ब-ख़ुद ऐसे बच्चे का चित्र बन जाता है जो किताबों के साथ गम्भीरता से बैठा हुआ हो, गृहकार्य कर रहा हो, किसी वयस्क की बात सुन रहा हो या याद किए हुए किसी अंश को दोहरा रहा हो। लेकिन कभी-कभी ख़ुद को यह याद दिलाना ज़रूरी है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है, न कि केवल एक परिणाम।

- रितिका गुप्ता, 'यह समझना कि बच्चे कब और कैसे सीखते हैं', पेज 21